बाल्यावस्था के सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य
(Theoretical Perspectives of Childhood Stages)

बाल्यावस्था की मुख्य रूप से अवधि 2 से 12 वर्ष तक मानी जाती है। जिसे मुख्यतः दो भागों में विभक्त किया जा सकता है।

(i) प्रारम्भिक बाल्यावस्था
(ii) उत्तर बाल्यावस्था

प्रारम्भिक बाल्यावस्था का प्रसार क्रमशः 2 से 6 वर्ष तक होता है। उत्तरबाल्यावस्था का प्रसार 6 से 12 वर्ष तक माना जाता है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था के अन्त तक बच्चों की ऊँचाई 46.6 इंच तथा वजन लगभग 22 kg हो जाता है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था के अंत तक बालक समाज के परिवेश में शामिल हो चुका होता है वह छात्र बन चुका होता है। उसका सामाजिक दायरा बढ़ चुका होता है तथा उसके समक्ष समायोजन की समस्या नये रूपों में खड़ी हो जाती है। इसे समस्या की आयु एवं खिलौने की उम्र भी कहा जाता है। इस अवधि में बच्चों की शारीरिक वृद्धि धीमी गति से होती है इसके अतिरिक्त बच्चों में अन्वेषण, जिज्ञासा एवं अनुकरण की प्रवृत्ति भी पायी जाती है।

इस अवस्था की मुख्य विशेषताएँ निम्नांकित हैं!—

Scanned with CamScanner

(i) बच्चों की यह अवस्था माता-पिता के लिए समस्यात्मक आयु होती है।
(ii) इसमें नकारात्मक व्यवहार बढ़ता है।
(iii) खिलौनों में बच्चों की रुचि बढ़ती है।
(iv) इसे 'पूर्व विद्यालयी आयु' भी कहते हैं।
(v) बच्चों में जिज्ञासा तथा अन्वेषण की प्रवृत्ति बढ़ जाती है।
(vi) बच्चों में प्रश्न करने की आदत बढ़ जाती है।
(vii) इसे पूर्व-टोली की आयु भी कहते हैं।
(viii) इसमें अनुकरण तथा सृजनशीलता भी प्रदर्शित होती है।

* विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में बाल्यावस्था के सिद्धान्त
(Theories of Childhood in different Social, Economic and Cultural Setting)

भारत विविधताओं का देश है। विभिन्न प्रकार के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यों से भारत समृद्ध है। भारतीय समाजों के आकार और विचार भिन्न होते हैं, व्यवहार सम्बन्धी नियम अलग होते हैं। अलग-अलग समाज अलग-अलग प्रकार के लोकाचार, रीतियों, प्रथाओं, परम्पराओं, कानूनों, धर्म और आचार का पालन करता है। समाज में स्थित लोग अपनी विशिष्टताओं के साथ अपने बालकों का लालन-पालन करते हैं * उनके व्यवहार को नियंत्रित करते हैं, उनको मानसिक सुरक्षा

MARCH APRIL MAY JUNE

Scanned with CamScanner

प्रदान करते हैं, उनकी आवश्यकताएँ पूरी करते हैं एवं उनका समाजीकरण करते हैं।

एक ही समाज आर्थिक कारक के कारण विभिन्न वर्गों में विभाजित होता है। भूमि पूंजी और सम्पत्ति के आधार पर वर्गों की आर्थिक स्थितियाँ वर्गीकृत होती हैं उच्च आर्थिक समूह मध्य आर्थिक समूह निम्न आर्थिक समूह और निर्धन समूह। परिवार की आर्थिक स्थिति का बालक के विकास पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। बालक का स्वास्थ्य, शिक्षा, समाजीकरण आदि सभी पक्ष परिवार की आर्थिक स्थिति पर निर्भर होते हैं।

* सामाजिक परिप्रेक्ष्य में बाल्यावस्था के सिद्धान्त :—

बाल्यावस्था में बालक अपने आस-पास के लोगों को देखकर सिखता है। वह अपने समुदाय के लोगों को समाज में विभिन्न क्रियाकलापों को करते देखता है एवं देखकर सीखने का प्रयास करता है। समाज के नियम, कानुन रीति, परपरा प्रथा धर्म इत्यादि तथ्यों का अवलोकन बच्चा बाल्यावस्था से ही करता है। एवं जो कुछ समाज के लोग मानते हैं घर-परिवार के लोग करते हैं उन्हीं का अनुसरण करके बच्चों में भी कार्य को करने की प्रवृत्ति जागृत होती है।

21 Sunday

Scanned with CamScanner

* आर्थिक परिपेक्ष्य में बाल्यावस्था के सिद्धान्त :—

बालक पर उसके माता-पिता के आर्थिक स्थिति का बहुत अधिक असर पड़ता है। वह समाज में अपने परिवार के आर्थिक स्थिति को आँकता है। क्योंकि बच्चों के अंदर हमेशा अपने आप को बड़ा दिखाना एवं समाज में अपने परिवार का स्टेटस ऊँचा हो ऐसी सोच होती है लेकिन जब वह ऐसा नहीं देखता है तो उसका आर्थिक विकास प्रभावित होता है वह अपने आप को हीनिय समझने लगता है तथा अन्य बच्चों से धीरे-धीरे दूरियाँ बढ़ाना शुरू कर देता है। समाज से कट-कट कर रहना शुरू कर देता है।

अतः बच्चों को परिवार में हर संभव यह आभास होना चाहिए की उनकी आर्थिक स्थिति ठीक है और अगर ठीक नहीं भी है तो हम अपने कर्मों के बल पर उसे ठीक करेंगे एवं उसके लिए उन्हें शिक्षा के लिए जागरूक करना चाहिए।

* सांस्कृतिक परिपेक्ष्य में बाल्यावस्था के सिद्धान्त :—

बच्चों को हमेशा यह शिक्षा देनी चाहिए की वह जिस देश में रहते हैं उस देश की

Scanned with CamScanner

सभ्यता एवं संस्कृति कितने वर्षों पुरानी है एवं उसी संस्कृति के बल पर हमारे देश का नाम पुरे विश्व में सम्मान के साथ लिया जाता है उसी संस्कृति के बल पर हमें विश्वगुरु की संज्ञा प्राप्त है क्योंकि साधारण वेशभुषा धारण करके भी हमने पुरे संसार को ऐसे-ऐसे अनुसंधान करके दिये तथा पुरे विश्व को मनुष्यता की पहचान कराते हुए जीने के लिए गुढ़ रहस्यों से साक्षात्कार कराये। हमारे देश के ऋषि-मुनियों ने जीवन-मरण से मुक्ति पाने के लिए मोक्ष का मार्ग प्रशस्त किये। हमारे देश में अनेकता में भी एकता है जिस तरह से यहां सभी धर्म के लोग एक साथ रहते हैं एवं सभी धर्म के लोग अपना त्योहार बिना की किसी रोक-टोक के शांति पूर्वक मनाते हैं अगर यह संभव है तो सिर्फ हमारे देश में ही।

अतः इस प्रकार बच्चों को परिवार से ही यह जानकारी देने की आवश्यकता होती है की उनके देश का सांस्कृतिक विस्तार कितना अत्यधिक है एवं उन्हें गौरवान्वित महसुस कराना चाहिए की वह इस देश के महान मातृभूमि पर जन्म लिये हैं और उनको यह बताना चाहिए की हमारे देश की संस्कृति को सहेजना एवं उसकी गरिमा को बरकरार रखने की जिम्मेदारी अब उनकी है।